

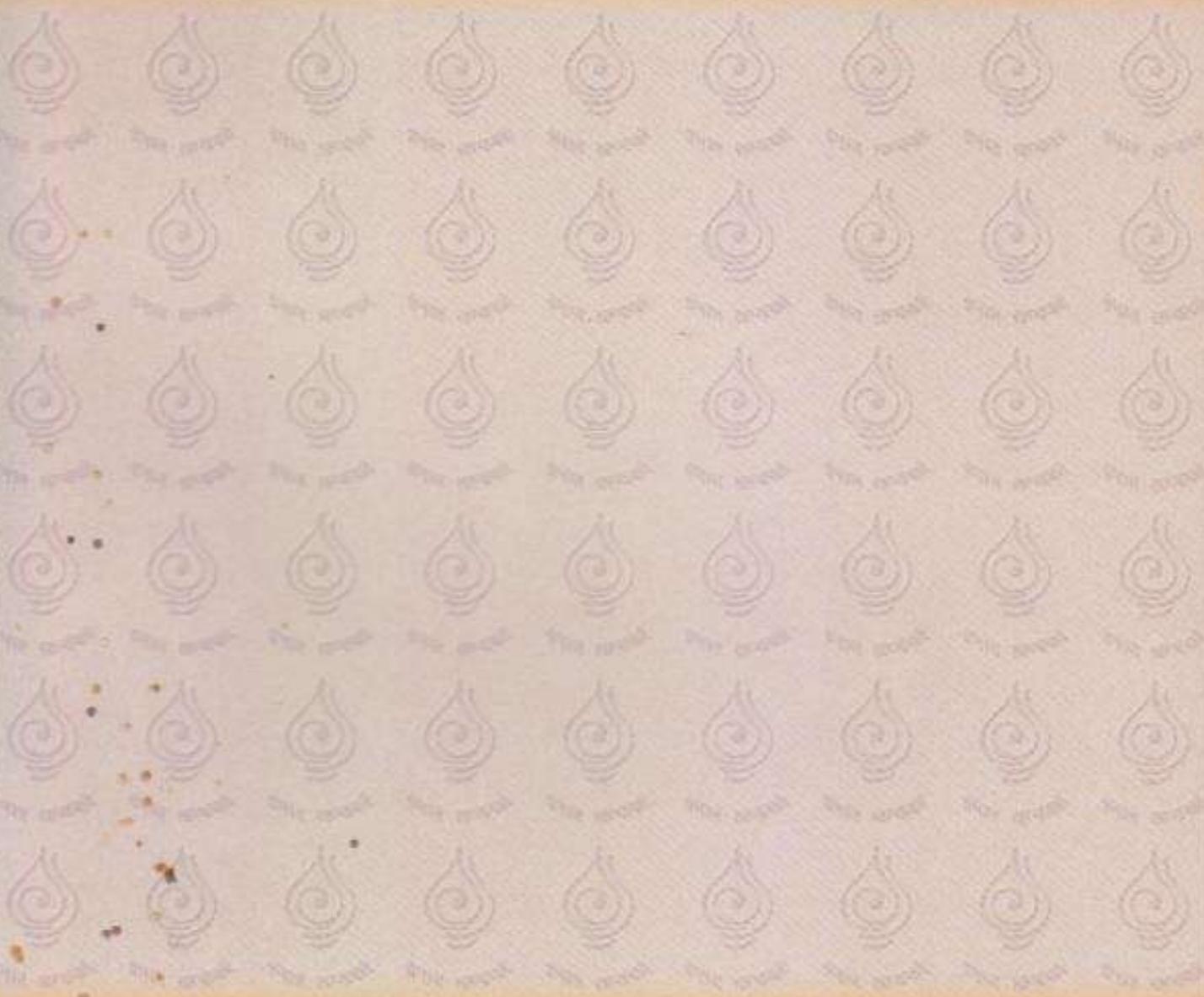
तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑĀ

वर्ष 29 • अंक 113-114 • जुलाई-दिसम्बर, 2001

Research Quarterly

अनुसंधान त्रैमासिकी



जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूँ
(मान्य विश्वविद्यालय)

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUН
(DEEMED UNIVERSITY)

तुलसी प्रज्ञा

TULSI PRAJÑĀ

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL-113-114

JULY-DECEMBER, 2001

Patron

Ms. Sudhamahi Regunathan
Vice-Chancellor

Editor in Hindi Section

Dr. Mumukshu Shanta Jain

English Section

Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial-Board

Dr. Mahavir Raj Gelra, Jaipur
Prof. Satyaranjan Banerjee, Calcutta
Dr. R.P. Poddar, Pune
Dr. Gopal Bhardwaj, Jodhpur
Prof. Dayanand Bhargava, Ladnun
Dr. Bachh Raj Dugar, Ladnun
Dr. Hari Shankar Pandey, Ladnun
Dr. J.P.N. Mishra, Ladnun



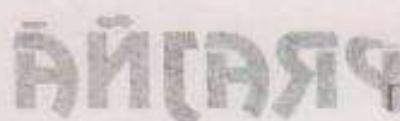
Publisher :

Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun-341 306

Research Quarterly of Jain Vishva Bharati Institute

VOL. 113-114

JULY-DECEMBER, 2001



Editor in Hindi

Dr. Mumukshu Shanta Jain

Editor in English

Dr. Jagat Ram Bhattacharya

Editorial Office

Tulsi Prajna, Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306 (Rajasthan)

Publisher : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306 (Rajasthan)

Type Setting : Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University)
Ladnun-341 306 (Rajasthan)

Printed at : Jaipur Printers Pvt. Ltd., Jaipur-302 015 (Rajasthan)

Subscription (Individuals) Annual Rs. 100/-, Three Year 250/-, Life
Membership Rs. 1500/- Sub-Institutions/Libraries) Annual Rs. 200/-

The views expressed and facts stated in this journal are those of the writers,
the Editors may not agree with them.



अनेकान्त सिद्धान्त और व्यवहार

राष्ट्रीय परिसंवाद में प्रस्तुत शोध-पत्र

१-३ जनवरी, २००१, गंगाशहर (बीकानेर)

अनुक्रमणिका / Contents

सिद्धान्त	लेखक	पृष्ठ
१. नवे वर्ष पर विश्व के नाम संदेश	आचार्य महाप्रज्ञ	१
२. अनेकान्त की सार्थक प्रस्तुति	मुमुक्षु शान्ता जैन	५
३. अनेकान्तवाद	आचार्य महाप्रज्ञ	८
४. भारतीय दार्शनिक चिन्तन में अनेकान्त	प्रो. सागरमल जैन	१५
५. क्या वेदान्त को अनेकान्त किसी अंश में स्वीकार्य हो सकता है?	डॉ. दयानन्द भार्गव	३२
६. अनेकान्तवाद - एक विवेचन	प्रो. तुषार कान्ति सरकार	३७
७. महावीर और अनेकान्तवाद	डॉ. अशोक कुमार जैन	३९
८. अनेकान्तवाद और उसके प्रयोग	मोहनसिंह भण्डारी	४८
९. पारिवारिक शान्ति और अनेकान्त	डॉ. बद्धराज दूगड़	५६
१०. महावीर का अनेकान्त : सामाजिक विमर्श	शुभू पटवा	६५
११. वैचारिक सहिष्णुता का सिद्धान्त : अनेकान्त	डॉ. सुदीप जैन	७१
१२. वर्तमान समस्याओं के समाधान में अनेकान्त की उपयोगिता	डॉ. हेमलता बोलिया	७७
१३. शान्त-सहवास में अनेकान्त की भूमिका	साधी आरोग्यश्री	८३
१४. अनेकान्त का सामाजिक पक्ष	श्रीमती रंजना जैन	८८
१५. अनेकान्त की प्रासंगिकता	सिद्धेश्वर भट्ट	९३
१६. महावीर का अनेकान्त : कुछ पक्ष, कुछ प्रश्न	प्रो. गोपाल भारद्वाज	९६
१७. लोकार्पण : आवश्यक निर्युक्ति (भाग-१) का		१०२

Anekānta: Theory and Practice

Research papers presented in National Symposium
Held on 1-3 April, 2001 at Gangashahar (Bikaner)

English Section

Subject	Author	Page
1. Fatless Cream and Decaffeinated Coffee ...	Sudhamahi Regunathan	103
2. Anekānta — A Jaina Contribution to Scholastic Methodology	M.R. Gelra	113
3. Anekānta Metaphysico - Spiritual Perspective	Prof. Kamal Chand Sogani	119
4. Anekāntavada and its statement in Saptabhanginaya	Arun K. Mukherjee	128
5. Uniqueness of Anekāntavāda	H.R. Dasegowda	135
6. The Applied Aspect of Anekāntā Philosophy	Dr. Nemi Chand Jain	138
7. Anekāntvada : Objections raised by Prof. N.K. Devaraja and answers given by Acharya Shri Mahaprajna	Dr. Pradyumna Shah	148
8. Anekānta: Its Relevance to the Modern Times	Dr. Anil Dhar	153



यःस्याद्वादी वचनसमये योप्यनेकान्तदृष्टिः
श्रद्धाकाले चकणविषये यश्च चाकित्रनिष्ठः ।
ज्ञानी ध्यानी प्रवचनपटुः कर्मयोगी तपस्वी,
नानाक्षयो अवतु शक्षणं वर्द्धमानो जिनेन्द्रः ॥

जो बोलने के समय स्याद्वादी, श्रद्धाकाल में अनेकान्तदर्शी, आचरण की भूमिका में चरित्रनिष्ठ, प्रवृत्तिकाल में ज्ञानी, निवृत्तिकाल में ध्यानी, ब्रह्म के प्रति कर्मयोगी और अन्तर् के प्रति तपस्वी हैं, वह नानारूपधर भगवान् वर्द्धमान मेरे लिए शरण हो।



हार्टिक शुभकामनाओं सहित—

एम. औ. सरावगी फाउण्डेशन

(महादेव लाल गंगादेवी सरावगी फाउण्डेशन)

41/1 सी, झावुतल्ला दोड, कोलकता- 700 019